माँ पर नहीं लिख सकता कविता

चंद्रकांत देवताले

डॉ आरिफ महात

माँ पर नहीं लख सकता क वता
माँ के लए संभव नहीं होगी मुझसे क वता
अमर चऊंटियों का एक दस्ता
मेरे मस्तिष्क में रेंगता रहता है
माँ वहां हर रोज चुटकी-दो-चुटकी आटा डाल देती है
मैं जब भी सोचना शुरू करता हूं
यह कस तरह होता होगा
घट्टी पीसने की आवाज मुझे घेरने लगती है
और मैं बैठे-बैठे दूसरी दुनिया में ऊंघने लगता हूं
जब कोई भी माँ छिलके उतार कर
चने, मूंगफली या मटर के दाने नन्ही हथे लयों पर रख देती है
तब मेरे हाथ अपनी जगह पर थरथराने लगते हैं
माँ ने हर चीज के छिलके उतारे मेरे लए
देह, आत्मा, आग और पानी तक के छिलके उतारे
और मुझे कभी भूखा नहीं सोने दिया
मैंने धरती पर क वता लखी है
चंद्रमा को गटार में बदला है
समुद्र को शेर की तरह आकाश के पंजरे में खड़ा कर दिया
सूरज पर कभी भी क वता लख दूंगा
माँ पर नहीं लख सकता क वता!

माँ पर नहीं लख सकता क वता

चन्द्रकान्त देवताले

डॉ. आरिफ महात

माँ पर नहीं लख सकता क वता

माँ के लए संभव नहीं होगी मुझसे क वता

अमर चऊंटियों का एक दस्ता

मेरे मस्तिष्क में रेंगता रहता है

माँ वहां हर रोज चुटकी-दो-चुटकी आटा डाल देती है

मैं जब भी सोचना शुरू करता हूं

यह कस तरह होता होगा

घट्टी पीसने की आवाज मुझे घेरने लगती है

और मैं बैठे-बैठे दूसरी दुनिया में ऊंघने लगता हूं

जब कोई भी माँ छिलके उतार कर

चने, मूंगफली या मटर के दाने नन्ही हथे लियों पर रख देती है

तब मेरे हाथ अपनी जगह पर थरथराने लगते हैं

माँ ने हर चीज के छिलके उतारे मेरे लए

देह, आत्मा, आग और पानी तक के छिलके उतारे

और मुझे कभी भूखा नहीं सोने दिया

मैंने धरती पर क वता लखी है

चंद्रमा को गटार में बदला है

समुद्र को शेर की तरह आकाश के पंजरे मे खड़ा कर दिया

सूरज पर कभी भी क वता लख दूंगा

माँ पर नहीं लख सकता क वता!